ASTROICA.COM

Rahu - Ketu Transit Report

KAREN LAURET

March 13, 1968, 08:00 AM

Kottayam

वक्रतुण्ड महाकाय सूर्यकोटि समप्रभः।
निर्विघ्नं कुरु मे देव सर्वकार्येषु सर्वदा॥

जन्म विवरण

नाम	KAREN LAURET
जन्म तिथि	13 March, 1968
जन्म का समय	08:00 am
जन्म तारीख	बुधवार
दिन/रात	दिन
जन्म स्थान	Kottayam
अक्षांश एवं देशांतर	9.93988, 76.26
समय क्षेत्र सुधार	स्टैण्डर्ड टाइम(+05:30)
अयनांश	लाहिड़ी
जेंडर (लिंग)	स्त्री

वर्ष 1968, 13 मार्च, बुधवार को उत्तरायण के समय, सूर्योदय के पश्चात 08:00 AM बजे 3 घटी (नाझिका) और 28 विघटी (विनाझिका) पर, चतुर्दशी तिथि, गर करण, धृति नित्य योग, मघा नक्षत्र के तीसरे पद में, मीन लग्न, कुम्भ सूर्य राशि और सिंह चन्द्र राशि में इस लड़की का जन्म हुआ।

नक्षत्र	चंद्र राशि	सूर्य राशि
मघा	सिंह	कुम्भ
पद : 3	लियो	एक्वेरियस

पंचांग का विवरण

नीचे दी गई तालिका KAREN LAURET के जन्म समय के पंचांग विवरण को दर्शाती है।

तिथि (चंद्र दिवस)	चतुर्दशी
नक्षत्र	मघा (3/4)
नक्षत्र प्रभु	केतु
योग	धृति
करण	गर
चंद्र राशि	सिंह
चंद्र राशि स्वामी	सूर्य
सूर्य राशि	कुम्भ
सूर्य राशि स्वामी	शनि
राशि चक्र चिन्ह (पश्चिमी प्रणाली)	पाइसीज़
आयन	उत्तरायण
ऋतु	शिशिर
हिंदू माह (अमांत)	फाल्गुन
सूर्योदय	06:36 am
सूर्यास्त	06:32 pm
चंद्रोदय	05:27 pm
चंद्रास्त	06:07 am

नक्षत्र, राशि, और अन्य विवरण	
लग्न राशि	मीन
नवमांश	कुम्भ
योग कारक	गुरू
आत्म कारक	सूर्य
अमात्य कारक	मंगल
लग्न आरूढ़	मकर
धन आरूढ़	कुम्भ
चंद्र-अवस्था	7/12
चन्द्र-वेला	19/36
चन्द्र-क्रिया	32/60
दग्ध राशि	चतुर्दशी कोई दग्ध राशि नहीं है
देवता	पितृ
गण	राक्षस गण
चिह्न	पालकी
पशु चिन्ह	चूहा
नाड़ी	कफ
रंग	क्रीम रंग
सर्वोत्तम दिशा	पश्चिम
शब्दांश	Ma, Me, Mu, Me
जन्म रत्न	वैडूर्य (लहसुनिया)
योनि	पुरुष
शत्रु	बिल्ली
वृक्ष	बरगद
भूत	जल
गोत्र	अंगिरस

आपकी कुंडली

नीचे उत्तर भारतीय शैली में KAREN LAURET के लिए लग्न, नवमांश और चंद्रमा चार्ट दिए गए हैं।

लग्न चार्ट

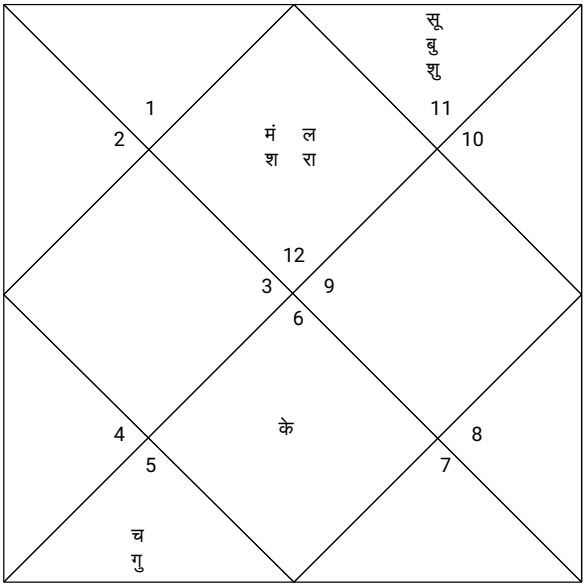

नवमांश चार्ट

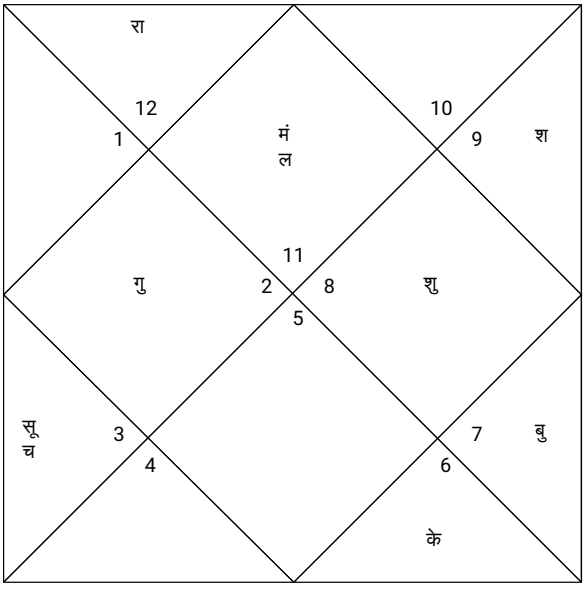

चंद्र चार्ट

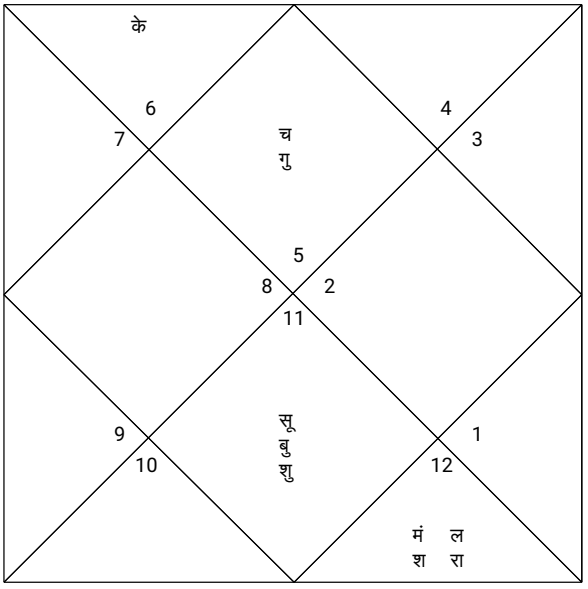

वेदिक ग्रह स्थिति (साइडरियल)

वैदिक ज्योतिष में, ग्रहों की स्थिति का निर्धारण निरयन रेखांश पर निर्भर करता है, जहाँ "निर-अयन" का अर्थ है कोई गति नहीं। यहाँ, अयनांश, गतिमान वसंत विषुव और सटीक नक्षत्र शून्य मेष बिंदु के बीच सटीक डिग्री अंतर, पश्चिमी ज्योतिष में उपयोग किए जाने वाले सायन रेखांश से घटाया जाता है। अयनांश की गणना के लिए उपयोग की जाने वाली विभिन्न प्रथाओं में से, यहाँ उपयोग की जाने वाली विधि चित्रपक्ष है।

चित्रपक्ष लाहिड़ी : 23° 24‘ 46“

नीचे दी गई तालिका दर्ज की गई तिथि, समय, और स्थान पर ग्रहों की स्थिति दर्शाती है (ग्रहों की निरयण देशांतर)

ग्रह	स्थान	डिग्री	राशि	प्रभु	नक्षत्र	प्रभु
रवि	329° 10‘ 21“	29° 10‘ 21“	कुम्भ	शनि	उत्तरभाद्रपदा	गुरू
चंद्र	126° 57‘ 39“	6° 57‘ 39“	सिंह	रवि	कृत्तिका	केतु
बुध	301° 38‘ 33“	1° 38‘ 33“	कुम्भ	शनि	स्वाति	मंगल
शुक्र	303° 33‘ 23“	3° 33‘ 23“	कुम्भ	शनि	स्वाति	मंगल
मंगल	355° 31‘ 3“	25° 31‘ 3“	मीन	गुरू	विशाखा	बुध
गुरू ℞	124° 46‘ 8“	4° 46‘ 8“	सिंह	रवि	कृत्तिका	केतु
शनि	349° 5‘ 19“	19° 5‘ 19“	मीन	गुरू	विशाखा	बुध
लग्न	353° 39‘ 13“	23° 39‘ 13“	मीन	गुरू	विशाखा	बुध
राहु ℞	356° 45‘ 44“	26° 45‘ 44“	मीन	गुरू	विशाखा	बुध
केतु ℞	176° 45‘ 44“	26° 45‘ 44“	कन्या	बुध	पुनर्वसु	मंगल

℞ वक्री को दर्शाता है

नीचे दी गई तालिका राशि चक्र में ग्रहों की स्थिति को उनके पश्चिमी नामों के साथ दर्शाती है।

ग्रह	स्थान	डिग्री	राशि	प्रभु	नक्षत्र	प्रभु
सूर्य	329° 10‘ 21“	29° 10‘ 21“	एक्वेरियस	शनि	उत्तरभाद्रपदा	गुरू
चंद्र	126° 57‘ 39“	6° 57‘ 39“	लियो	सूर्य	कृत्तिका	केतु
बुध	301° 38‘ 33“	1° 38‘ 33“	एक्वेरियस	शनि	स्वाति	मंगल
शुक्र	303° 33‘ 23“	3° 33‘ 23“	एक्वेरियस	शनि	स्वाति	मंगल
मंगल	355° 31‘ 3“	25° 31‘ 3“	पाइसीज़	गुरू	विशाखा	बुध
गुरू ℞	124° 46‘ 8“	4° 46‘ 8“	लियो	सूर्य	कृत्तिका	केतु
शनि	349° 5‘ 19“	19° 5‘ 19“	पाइसीज़	गुरू	विशाखा	बुध
लग्न	353° 39‘ 13“	23° 39‘ 13“	पाइसीज़	गुरू	विशाखा	बुध
राहु ℞	356° 45‘ 44“	26° 45‘ 44“	पाइसीज़	गुरू	विशाखा	बुध
केतु ℞	176° 45‘ 44“	26° 45‘ 44“	वर्गो	बुध	पुनर्वसु	मंगल

℞ वक्री को दर्शाता है

विंशोत्तरी दशा

वैदिक ज्योतिष के अनुसार विंसोत्तरी दशा सबसे महत्वपूर्ण और सर्वोच्च दशा है। 120 वर्षों की अवधि में 9 दशाएँ विभाजित हैं। प्रत्येक दशा का एक शासक ग्रह होता है और किसी व्यक्ति का जीवन सीधे तौर पर उस विशेष दशा को नियंत्रित करने वाले उसके शासक ग्रह की प्रकृति से प्रभावित होता है। पहली महादशा किसी दिए गए नक्षत्र में जन्म के चंद्रमा की स्थिति से निर्धारित होती है।

जन्म समय से शेष बचा हुआ दशा काल : 3 years, 4 months and 4 days

नीचे विभिन्न महादशाओं का प्रारंभ समय और समाप्ति समय दिया गया है

प्रभु	शुरुआत	समापन
केतु	17-Jul, 1964	18-Jul, 1971
शुक्र	18-Jul, 1971	18-Jul, 1991
सूर्य	18-Jul, 1991	17-Jul, 1997
चंद्र	17-Jul, 1997	18-Jul, 2007
मंगल	18-Jul, 2007	18-Jul, 2014
राहु	18-Jul, 2014	17-Jul, 2032
गुरू	17-Jul, 2032	17-Jul, 2048
शनि	17-Jul, 2048	18-Jul, 2067
बुध	18-Jul, 2067	17-Jul, 2084

आपकी जन्म कुंडली में राहु - केतु का विश्लेषण

वैदिक ज्योतिष में राहु और केतु को छाया ग्रह माना जाता है। ये सौरमंडल के अन्य ग्रहों की तरह भौतिक वस्तुएँ नहीं हैं, बल्कि गणितीय बिंदु होते हैं जिन्हें ज्योतिषीय दृष्टिकोण से अत्यंत महत्वपूर्ण माना जाता है।

हिंदू पुराणों के अनुसार, राहु एक असुर (राक्षस) का सिर है जिसे अमृत पीने के बाद अमरत्व प्राप्त हुआ। केतु उस असुर का धड़ (शरीर) है जिसे भगवान विष्णु ने अलग किया था, वह असुर के अमर होने के बाद।

राहु और केतु अन्य ग्रहों की तरह सीधा नहीं चलते, बल्कि ये सदा वक्री गति (पीछे की दिशा) में चलते हैं। ये अन्य ग्रहों की दिशा के विपरीत राशि चक्र में गतिमान होते हैं। राहु और केतु को एक राशि चक्र (12 राशि) की परिक्रमा पूरी करने में लगभग 18 वर्ष लगते हैं और ये प्रत्येक राशि में लगभग 1.5 वर्ष तक रहते हैं।

प्रथम भाव में राहु

जब राहु प्रथम भाव में स्थिति होता है, तो इसके प्रभाव काफी भिन्न हो सकते हैं। ऐसे जातक धन और शक्ति से संपन्न हो सकते हैं, लेकिन साथ ही विभिन्न रोगों से पीड़ित हो सकते हैं। इसके अतिरिक्त, प्रथम भाव में राहु की उपस्थिति जातक के स्वभाव में करुणा और नैतिक गुणों की कमी को इंगित कर सकती है। व्यक्ति गलत कार्यों में लिप्त हो सकता है व साथ ही व्यक्ति बेचैन स्वभाव का बन सकता है। हालाँकि, यह स्थिति जातक को साहस और अपने कार्यों में कुशलता भी प्रदान कर सकती है। यह योग प्रायः असामान्य अथवा कपटपूर्ण तरीकों से धन अर्जित करने से जुड़ा होता है। इसके अतिरिक्त, जब राहु प्रथम भाव में सिंह, कर्क अथवा मेष राशि में स्थित होता है, तो यह अत्यधिक धन व समृद्धि प्रदान कर सकता है, क्योंकि इन राशियों में राहु की स्थिति शुभ मानी जाती है। हालांकि, राशि कोई भी हो, प्रथम भाव में राहु की उपस्थिति जातकों को अस्थिर बनाए रखती है व उन्हें क्रांतिकारी अथवा अराजक प्रवृत्तियों की ओर प्रवृत्त कर सकती है।

सातवे भाव में केतु

केतु के साँतवे भाव में होने से जातक को जीवन में कई परेशानियों का सामना करना पड़ सकता है। ऐसा व्यक्ति आत्र रोगों से पीड़ित हो सकता है। वे बहुत ही आलसी, असभ्य और अधिक सोने वाला और या फिर जल्द ही थक जाने वाला हो सकता है। इससे जातक तिरस्कार झेल सकता है और कई रोमानी साथियों के साथ का आनंद ले सकता है। यह स्थिति जातक के जीवनसाथी का अच्छा स्वास्थ्य होने में कठिनाईयाँ भी पैदा कर सकती है, विशेष रूप से यदि केतु किसी हानिकारक ग्रह के संयोग में या दृष्टि में हो तो।

राहु-केतु गोचर

गोचर चार्ट

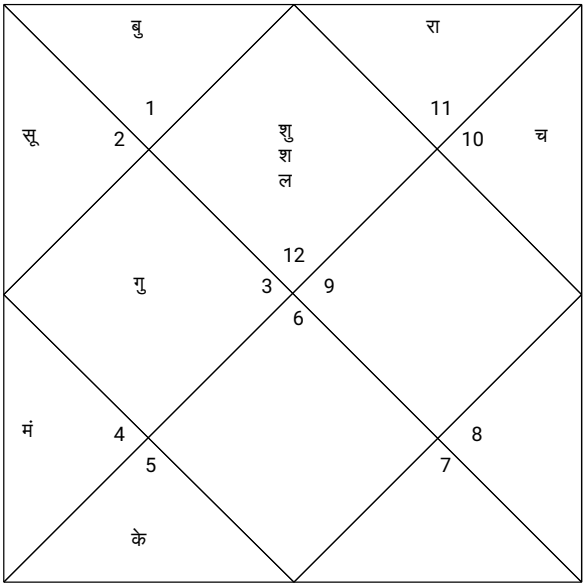

राहु और केतु क्रमशः May 18, 2025 से December 05, 2026 तक कुम्भ राशि और सिंह राशि में गोचर कर रहे हैं। यह गोचर आपकी जन्म राशि सिंह से राहु के लिए पहले भाव और केतु के लिए पहले भाव में होगा। राहु और केतु आपके लिए स्वर्ण मूर्ति हैं, जिसके कारण इन सकारात्मक प्रभावों की अभिव्यक्ति में मध्यम स्तर की कमी देखी जा सकती है।

राहु और केतु क्रमशः कुम्भ राशि और सिंह राशि में 1 year, 6 months and 17 days तक रहेंगे।

अगला राहु और केतु का गोचर December 05, 2026 को होगा, जब राहु मकर राशि में और केतु कर्क राशि में प्रवेश करेंगे।

राहु और केतु को पारंपरिक रूप से अशुभ ग्रह माना जाता है, इसलिए इनके गोचर की भविष्यवाणियाँ अक्सर चुनौतिपूर्ण परिणामों को उजागर करती हैं। किसी भी ग्रह गोचर के प्रभाव, चाहे सकारात्मक हों या नकारात्मक, कई कारकों से बदल सकते हैं या कम किए जा सकते हैं, जैसे कि अन्य ग्रहों से प्राप्त दृष्टि, व्यक्ति की जन्म कुंडली में ग्रह की स्थिति, और अन्य चल रहे गोचरों का प्रभाव आदि।

ये भविष्यवाणियाँ उस संभावित जीवन क्षेत्र की जानकारी देने के लिए हैं जहाँ राहु और केतु के प्रभाव उनके गोचर के दौरान प्रकट हो सकते हैं, जैसा कि ज्योतिष शास्त्रों में उल्लेखित है। हम उपयोगकर्ताओं से अनुरोध करते हैं कि वे इस जानकारी को केवल आवश्यक सावधानी बरतने के मार्गदर्शन के रूप में लें और इन भविष्यवाणियों से घबराएँ या चिंतित न हों।

राहु के सातवे भाव में गोचर का प्रभाव

राहु के साँतवे भाव में होने से, जातक को आत्म-सम्मान और मान-मर्यादा से जुड़ी समस्याओं का सामना करना पड़ सकता है, जिससे वाद-विवाद या मतभेद होने की संभावना बन सकती है। आपके बहस करने के स्वभाव के कारण रिश्तों में समस्याएँ आ सकती है और दोस्तों और रिश्तेदारों के साथ सबंधों में दरार आ सकती है। जीवनसाथी की सेहत को लेकर कुछ समस्याओं का सामना करना पड़ सकता है और परेशानी का कारण बनने वाले लोगों के संपर्क में आने से आपको भी समस्याओं का सामना करना पड़ सकता है, संभव है कि आप बदनामी का भी शिकार हो जाएँ। ऐसे जातकों को यात्रा या स्थान परिवर्तन से जुड़ी कुछ समस्याओं का सामना करना पड़ सकता है, साथ ही, संपति से संबंधित छोटी-छोटी समस्याएँ पैदा हो सकती है। इसके अलावा जीवनसाथी के साथ कुछ मतभेद हो सकते हैं, जिन्हें समझने और सुलझाने की आवश्यकता है।

केतु के प्रथम भाव में गोचर का प्रभाव

जब केतु किसी जातक की कुंडली के प्रथम भाव में प्रवेश करता है, तो जातक को कुछ बाधाओं व परेशानियों का सामना करना पड़ सकता है। मानसिक तनाव व चिंता बनी रह सकती है, साथ ही स्वास्थ्य से सम्बन्धित परेशानियाँ भी हो सकती हैं। भाई-बहनों के साथ विवाद हो सकता है तथा आग से सम्बन्धित दुर्घटनाओं का खतरा भी हो सकता है। भाइयों को स्वास्थ्य समस्याओं व संपत्ति में हानि जैसी विषम परिस्थितियों का सामना करना पड़ सकता है। इसके अतिरिक्त, त्वचा के रंग में बदलाव अथवा विकार हो सकता है।

इन परेशानियों के बावजूद, ज्ञान कारक के रूप में केतु की उपस्थिति भक्ति व आध्यात्मिक विकास को प्रोत्साहित कर सकती है। भौतिक जीवन में आने वाली अड़चनें आत्मिक यात्रा को गहराई प्रदान कर सकती हैं, जिससे चुनौतियाँ, आंतरिक विकास और आध्यात्मिक ज्ञान के अवसरों के रूप में परिवर्तित हो सकती हैं।

राहु के कुंभ राशि में गोचर का प्रभाव

मीन लग्न वालों के लिए यह गोचर द्वादश भाव, व्यय भाव से होकर जाएगा, जो खर्च, हानि, एकांत, विदेश यात्रा, निवास तथा आध्यात्मिकता आदि का प्रतिनिधित्व करता है। यह भाव शनि के अधिकार क्षेत्र में आता है, जो राहु का मित्र ग्रह है। जातक को खर्चों को प्रभावी ढंग से प्रबंधित करने में परेशानियाँ हो सकती हैं तथा विदेशी सम्बन्धों से जुड़े मामलों में भी कुछ समस्याएँ आ सकती हैं। चूँकि राहु एक स्थिर व कठोर ग्रह, शनि की राशि से अग्रसर हो रहा है, जातक जटिल रणनीतियों के माध्यम से अपने खर्चों को सुचारू रूप से नियंत्रित करने के लिए अथक प्रयास करेगा। फिर भी, राहु के स्वाभाविक गुणों के कारण, जातक को वित्तीय मामलों और बाहरी सम्बन्धों में चुनौतियों, कमी व कठिनाइयों का सामना करना पड़ सकता है। इन कठिनाइयों के बावजूद, राहु का मित्र ग्रह के भाव में स्थित होना जातक को निरंतर प्रयास और दृढ़ संकल्प के माध्यम से सफलता प्राप्त करने में सहायता करेगा।

केतु के सिंह राशि में गोचर का प्रभाव

मीन राशि के जातक छठे केंद्र, शत्रु भाव, जो बीमारी, शत्रु और कर्ज जैसे विषयों की ओर संकेत करता है, में इस गोचर के प्रभावों से प्रभावित होंगे। यह भाव नवग्रहो के राजा, सूर्य जो केतु के घोर शत्रु हैं,के शासनाधीश हैं। वेदिक ज्योतिष के नियमों के अनुसार, क्रूर ग्रह जैसेकि केतु छठे भाव, जिसे एक नकरात्मक फल देने वाला भाव माना जाता है, में गोचर के दौरान और भी मजबूत व प्रभावशाली हो जाता है। परिणामस्वरूप, जातक सफलतापूर्वक अपने शत्रुओं पर अपनी आंतरिक शक्ति व अथक प्रयास से विजय प्राप्त कर लेगा/लेगी। जातक को सभी तरह की परेशानियों, विवादों और बाधाओं पर सफलता प्राप्त होगी और जातक अपने प्रभाव व प्रभुत्व को और मजबूत करने के लिए तत्परता औऱ दृढ़ संकल्प शक्ति के साथ काम करेगा/करेगी। हालाँकि, केतु की सहज प्रवृत्ति के कारण जातक स्वयं कोशत्रुओं से जुड़ी आंतरिक परेशानियों व समस्याओं से घिरा हुआ पाता/पाती है। इसके बावजूद, चूँकि केतु जिद्दी, निरंतर चलायमान व अत्यंत उत्साही ग्रह सूर्य के आधीन गोचर कर रहा है, जातक सभी विपरीत परिस्थितियों के बाद भी निडर व अडिग बना रहता है।

राहु-केतु का नक्षत्रों में गोचर

कुल मिलाकर 27 नक्षत्रों के संयोग से 12 राशियाँ बनी होती हैं। जब कोई ग्रह किसी राशि में गोचर करता है, तो वह लगभग दो और आधे नक्षत्रों से होकर गुजरता है। नीचे राहु और केतु के इन नक्षत्रों से गोचर के समय की भविष्यवाणियाँ और तिथियाँ प्रस्तुत की गई हैं:

राहु उत्तरभाद्रपदा नक्षत्र में गोचर

राहु का उत्तरभाद्रपदा नक्षत्र में गोचर, जो गुरू द्वारा शासित है, जो सिंह के छटे भाव में स्थित है। वध तारा होने के कारण, उत्तरभाद्रपदा बुरा प्रभाव उत्पन्न करता है।

राहु का उत्तरभाद्रपदा नक्षत्र में March 16, 2025 से November 23, 2025 तक गोचर

राहु उत्तराषाढ़ा नक्षत्र में गोचर

राहु का उत्तराषाढ़ा नक्षत्र में गोचर, जो राहु द्वारा शासित है, जो मीन के पहले भाव में स्थित है। दैवानुकूल तारा होने के कारण, उत्तराषाढ़ा अच्छा प्रभाव उत्पन्न करता है।

राहु का उत्तराषाढ़ा नक्षत्र में November 23, 2025 से August 02, 2026 तक गोचर

राहु स्वाति नक्षत्र में गोचर

राहु का स्वाति नक्षत्र में गोचर, जो मंगल द्वारा शासित है, जो मीन के पहले भाव में स्थित है। प्रत्यक्ष तारा होने के कारण, स्वाति बुरा प्रभाव उत्पन्न करता है।

राहु का स्वाति नक्षत्र में August 02, 2026 से April 10, 2027 तक गोचर

केतु मूल नक्षत्र में गोचर

केतु का मूल नक्षत्र में गोचर, जो सूर्य द्वारा शासित है, जो कुम्भ के बारहवे भाव में स्थित है। विपत्त तारा होने के कारण, मूल बुरा प्रभाव उत्पन्न करता है।

केतु का मूल नक्षत्र में November 11, 2024 से July 20, 2025 तक गोचर

केतु मघा नक्षत्र में गोचर

केतु का मघा नक्षत्र में गोचर, जो शुक्र द्वारा शासित है, जो कुम्भ के बारहवे भाव में स्थित है। सम्पत्त तारा होने के कारण, मघा बहुत अच्छा प्रभाव उत्पन्न करता है।

केतु का मघा नक्षत्र में July 20, 2025 से March 29, 2026 तक गोचर

केतु कृत्तिका नक्षत्र में गोचर

केतु का कृत्तिका नक्षत्र में गोचर, जो केतु द्वारा शासित है, जो कन्या के सातवे भाव में स्थित है। जन्म तारा होने के कारण, कृत्तिका मध्यम प्रभाव उत्पन्न करता है।

केतु का कृत्तिका नक्षत्र में March 29, 2026 से December 05, 2026 तक गोचर

राहु के नक्षत्रों से गोचर का प्रभाव

राहु के उत्तरभाद्रपदा से गोचर के दौरान, जातक खराब संगत को अपना सकता है, जिससे जातक के जीवन में परेशानियाँ उत्पन्न हो सकती है, जिससे जातक का ध्यान भटक सकता है तथा वह गलत निर्णय ले सकते हैं। बुरी संगति में रहने से खराब आदतें विक्सित हो सकती हैं, अतः सतर्क रहना व इन सम्बन्धों के कारण समग्र स्वास्थ्य पर पड़ने वाले प्रभाव पर विचार करना अत्यंत आवश्यक है।

राहु के उत्तराषाढ़ा से गोचर के दौरान, जातक को शत्रुओं पर विजय प्राप्त करने व उन्हें परास्त करने के महत्वपूर्ण अवसर प्राप्त हो सकते हैं। यह अवधि सशक्तिकरण और स्पष्टता ला सकती है, जिससे रणनीतिक निर्णय लेने में सहायता प्राप्त होती है जो जातक की व्यक्तिगत शक्ति व आत्मविश्वास में वृद्धि करते हैं, जिससे विजय और उपलब्धि की भावना उत्पन्न होती है।

राहु के स्वाति से गोचर के दौरान, विरोधियों से निपटने में चुनौतियाँ उत्पन्न कर सकता है, जिससे शत्रुओं पर विजय पाने में बाधाएँ आ सकती हैं। संघर्ष बढ़ सकते हैं, जिसके परिणामस्वरूप निराशा की भावनाएँ उत्पन्न हो सकती हैं। अनावश्यक टकराव व जटिलताओं से बचने के लिए संवाद में सतर्कता व विचारशीलता बनाए रखना महत्वपूर्ण है।

केतु के नक्षत्रों से गोचर का प्रभाव

केतु के मूल से गोचर के दौरान आपके प्रयासों के बावजूद यह समय आपके लिए आर्थिक लाभ व कार्यक्षेत्र में मिलने वाली पदोन्नति में देरी कर सकता है। ऐसा प्रतीत होगा जैसे आगे बढ़ने के सभी मार्ग बंद हो गए हैं, जो आपकी परेशानी व तनाव का कारण बनेगा। आर्थिक प्रगति की चाल धीमी होगी और आपको अपनी पहचान बनाने में मुश्किलों का सामना पड़ सकता है, इस समय के दौरान आने वाली बाधाओं को पार करने के लिए आपको धैर्य व दृढ़ संकल्पी होने की आवश्यकता है।

केतु के मघा से गोचर के दौरान, स्वास्थ्य संबंधी चुनौतियाँ और मानसिक पीड़ा दृष्टिगोचर होंगी जोकि पुनर्नवीनीकरण की अवधि हेतु मार्ग प्रशस्त कर रही है। सकरात्मक ऊर्जा उस आरोग्यता व भावनात्मक स्थिरता को बढ़ा रही है, जो धीरे-धीरे बीते समय के संघर्षों को समाप्त कर शांति व पुनरुद्धार के भाव को विकसित कर रही है।

केतु के कृत्तिका से गोचर के दौरान, जातक की स्वास्थ्य से सम्बन्धित समस्याओं तथा मानसिक तनाव में सुधार हो सकता है। हालाँकि चुनौतियाँ बनी रहेंगी, लेकिन धीरे-धीरे हो रही प्रगति राहत का अनुभव कराएगी। यह अवधि धैर्य रखने तथा बेहतर स्वास्थ्य व भावनात्मक संतुलन की दिशा में छोटे-छोटे कदम उठाने को प्रेरित करती है।

गोचर वेध

राशि के माध्यम से ग्रहों का पारगमन अनुकूल और प्रतिकूल दोनों तरह के परिणाम देता है, जो व्यक्ति की जन्म राशि (जन्म चंद्र राशि) के सापेक्ष उसके घर की स्थिति पर निर्भर करता है, जहां पारगमन होता है। कभी-कभी, ये सकारात्मक और नकारात्मक प्रभाव जन्म राशि के सापेक्ष विशेष घरों में अन्य पारगमन ग्रहों की स्थिति से समाप्त हो जाते हैं। जब किसी पारगमन ग्रह के सकारात्मक प्रभाव निष्प्रभावी हो जाते हैं, तो उसे गोचर वेध कहते हैं, और इसी तरह, जब गोचर ग्रह से उत्पन्न होने वाले नकारात्मक प्रभाव निष्प्रभावी हो जाते हैं, तो उसे विपरीत वेध कहा जाता है।

राहु

इस गोचर के दौरान राहु के लिए कोई गोचर वेध या विपरीत वेध नहीं हो रहा है।

केतु

इस गोचर के दौरान केतु के लिए कोई गोचर वेध या विपरीत वेध नहीं हो रहा है।

उपचार

वैदिक ज्योतिष में छाया ग्रह राहु और केतु अपने कर्म प्रभाव के लिए जाने जाते हैं और जीवन में चुनौतियाँ ला सकते हैं। उनके प्रभावों का मुकाबला करने के उपायों में अक्सर मंत्रों का जाप करना, गोमेद और लहसुनिया जैसे रत्न पहनना या दान करना, अनुष्ठान और पूजा करना और उनकी हानिकारक ऊर्जा को कम करने और संतुलन बहाल करने के लिए विशिष्ट प्रसाद चढ़ाना शामिल है। वैदिक ग्रंथों में बताए गए कुछ उपाय इस प्रकार हैं:

गोमेन्द्रत्नं च तुरंगमश्च सुनीलचैलानि च कंबलानि।
तिलश्च तैलं खलु लोहमिश्रं स्वर्भानवे दानमिदं वदन्ति।।
वैडूर्यरत्नं सतिलं च तैलं सुकंबलश्चापि मदो मृगस्य।
शस्त्रं च केतोः परितोषहेतो रुदीरितं दानमिदं मुनिन्द्रैः।।

जैसा कि पूर्ववर्ती संस्कृत श्लोकों में संकेत किया गया है, निम्नलिखित दान या अर्पण जन्म कुंडली में राहु और केतु के नकारात्मक प्रभावों को कम करने में सहायक हो सकते हैं:

राहु को शांत करने हेतु अर्पण:

- गोमेद रत्न
- काला घोड़ा
- नीले वस्त्र
- कंबल
- तिल
- तेल
- लोहा

केतु को शांत करने हेतु अर्पण:

- लहसुनिया रत्न
- तिल
- तेल
- कंबल
- कस्तूरी
- तलवार

ऐसा माना जाता है कि ये अर्पण राहु और केतु के प्रतिकूल प्रभावों को कम कर संतुलन और कल्याण को बढ़ावा देते हैं।

मंत्र

हिंदू धर्म में यह व्यापक रूप से माना जाता है कि मंत्र — विशेष पवित्र जप — उनके उच्चारण के दौरान उत्पन्न होने वाली कंपनात्मक प्रतिध्वनि के माध्यम से शरीर, मन और आत्मा पर शांतिदायक प्रभाव उत्पन्न करते हैं। निम्नलिखित मंत्र विशेष रूप से राहु और केतु से संबंधित समस्याओं के समाधान हेतु शांतिदायक माने जाते हैं।

राहु के लिए मंत्र

ॐ भ्रां भ्रीं भ्रौं सः राहवे नमः ।
Aum Bhraam Bhreem Bhraum Saha Raahave Namaha

ॐ रां राहवे नमः ॥
Aum Raang Raahave Namaha

॥ॐ शिरोरूपाय विद्महे अमृतेशाय धीमहि तन्नो राहु: प्रचोदयात॥
Aum shirorupaaya vidmahe Amruteshaaya dheemahi Tanno ketu prachodayaat

केतु के लिए मंत्र

॥ ॐ स्रां स्रीं स्रौं स: केतवे नम: ॥
Aum Sraam Sreem Sraum Saha Ketave Namaha

॥ ॐ कें केतवे नम: ॥
Aum Kem Ketave Namaha

॥ॐ शिरोरूपाय विद्महे अमृतेशाय धीमहि तन्नो राहु: प्रचोदयात॥
Aum shirorupaaya vidmahe Amruteshaaya dheemahi Tanno raahu prachodayaat

प्रदान किए गए मंत्र सामान्य मंत्र हैं जिन्हें शास्त्रों में उल्लिखित अनुसार प्रतिदिन 108 बार जपने की सलाह दी जाती है। वांछित फल प्राप्त करने हेतु इन मंत्रों का सही उच्चारण सुनिश्चित करने के लिए किसी ज्ञानी एवं अनुभवी व्यक्ति से मार्गदर्शन लेना अत्यंत अनुशंसित है।

गोचर वेध सूर्य और चंद्रमा के लिए

जैसे ही राहु और केतु क्रमशः आपकी कुंडली के 1वें और 7वें भाव से गोचर कर रहे हैं, इस अवधि में सूर्य या चंद्रमा की ओर से कोई गोचर वेध या विपरीत वेध का प्रभाव आप पर नहीं पड़ रहा है। इसका अर्थ है कि इस ग्रह गोचर का प्रभाव पूर्ण रूप से निर्बाध रहेगा, जिससे इसके स्वाभाविक प्रभाव — चाहे वे लाभकारी हों या चुनौतीपूर्ण — बिना किसी अन्य ग्रह के हस्तक्षेप के पूरी तरह प्रकट होगी।

Disclaimer: All astrological calculations are based on vedic rules & scientific equations and not on any published almanac. Though all efforts have been made to ensure the accuracy of all published reports and calculations, we do not rule out the possibility of any unexpected errors. Therefore, Astroica cannot be held responsible for the decisions that may be taken by anyone based on this report. Astroica assumes no liability for any decisions made based on output from our calculations or reports. The reports or remedies should not be used as substitute for advice, programs, or treatment that you would normally receive from a licensed professional, such as a financial or legal advisor, doctor, psychiatrist etc. Information, forecasts, predictions, reports and remedies provided by Astroica should be taken strictly as guidelines and suggestions.

ASTROICA.COM

www.prokerala.com

1800 425 0053

support@prokerala.com